समय बहुत कम है

समय बहुत कम है

निशान्त

आधुनिक प्रकाशन, बीकानेर

प्रकाशक : आधुनिक प्रकाशन
तेलीवाड़ा, बीकानेर-334001

लेखक : निशान्त, पीली बंगा (राजस्थान)

संस्करण : 1989

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

आवरण : अमित भारती

मुद्रक : पवन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

SAMAY BAHUT KAM HAI by Nishant (Poems) Rs. 40.00

श्रद्धेय
श्री जनक राज पारीक
को
जिन्होंने सर्वप्रथम
इस पर चलना सिखाया

क्रम

बिना सहारे का गरीब

कैसे-कैसे
भवनों का जिकर है किताबों में
जो कि लाजमी होते हैं
आदमी की सेहत के लिए
लेकिन इनका मकान तो
कस्बे के बाजार से सटा
यह खाली मैदान है
न झोंपड़ी, न तम्बू
कुछ गूदड़े हैं
ओढ़ने-बिछाने के लिए
जो अब दिन में पड़े हैं
एक तरफ छोटी-सी ढेरी की शक्ल में
बिना सांवटे
पास ही एक हंड़िया
चढ़ी है
दो ईंटों के सहारे
जिसमें सीझ रहे हैं
मिट्टी से बुहारे-झाड़े
दाणे
कुड़छी न डोई
हिल रही है
एक लकड़ी
मकड़ी हुए
बुढ़िया के हाथ से
यह तो खाका था
इनकी बदहाली का
अब हाल सुनो

इज्जत सबकी होती है
और जब यह खोती है
तो कलेजे में बड़ी कसक होती है
दो जमींदार जिनके खेतों में
इनने काम किया था
कल रात शराब पीए
इधर निकल आए
और बुढ़िया की जवान बहू को
खींचकर थोड़ा दूर
ले जाना चाहा
लड़का बिगड़ा तो
गंड़ासा चला
लहू की धार फूटी
सुबह
बिना रपट लिखाए
किसी ने
पट्टी नही की तो
इन्हे थाने जाना पड़ा
और बुढिया के कहे मुताबिक
थानेदार ने
उन जमींदारो से इन्हे
इलाज के लिए
पैसा दिला दिया
हैरान हूं
इतनी मुस्तैदी
हमारे इस थानेदार ने दिखा दी
क्या पता
आदमी का दिल है
नेकनीयती पर आ गया होगा तो
आ गया होगा
नही तो······
··········!



फैलती हुई दहशत

कल तक छज्जू चौकीदार का जीवन
किसी झील की तरह शान्त था
कुछ पैसों से हो जाता था
दाल-रोटी का जुगाड़
और बच्चे पल रहे थे
लेकिन आज
एक दहशत है
जो उसे किसी
झंझावात की तरह
हिला रही है
कल रात तो बड़ी
उथल-पुथल मची
उसकी जान में
बेचारे के दिन अच्छे थे
तभी तो तलवार सिर्फ हाथ पर ही लगी
और दनदनाती हुई चार गोलियां
ऊपर से निकल गयी
उसका कसूर सिर्फ इतना ही था कि
उसने उन्हें रात के वक्त
अपनी टार्च नही दी
सुबह छज्जू थाने में
रपट दर्ज कराने गया था
लेकिन आज शाम तक
कुछ नही हुआ उनका
वे खुद ही थाने मे जाकर
बैठ आए हैं
शाही मेहमानों की तरह

सुना है वे कह रहे हैं—
हम छज्जू को जिन्दा नही छोड़ेंगे
इसलिए
छज्जू की दहशत
सारे कस्बे मे फैल रही है
वे दस-बीस ही सही
संगठित और हथियारबंद हैं
जब कि कस्बे के लोग हैं
बिखरे हुए
हां! संगठित हो जाएं तो
सारे कस्बे की दहशत
उनकी दहशत बन सकती है
नही तो छज्जू को
कस्बा छोड़ना पड़ेगा
और…!



समय बहुत कम है

खतरे उठाओ
समय बहुत कम है
सुविधाओं की ओर
देखते रहे तो
देखते ही रह जाओगे
सारी स्थितियां तो
अनुकूल कभी नहीं होंगी
लेकिन जोश मे कहीं
फोकट में ही न मारे जाओ
ध्यान
इस ओर भी लगाओ
यह ठीक है कि
आखिरी काम
मोर्चा लगाना ही है
लेकिन मोर्चे के लिए
जमीन तैयार करना भी
कम महत्त्वपूर्ण नहीं है



रोटी

किसी भूखे को जब
मिलती है रोटी
तो उसकी आंखों की चमक
बदल जाती है
उसके भीतर से
आशीष की एक
भरपूर डकार निकलती है
जबकि किसी अघाए हुए को
मिलती है रोटी
तो उसके मन में
रोटी के प्रति
जरा भी श्रद्धा नहीं होती
फिर भी
न जाने कैसी है रोटी
उसके पास ही
सदा फालतू होती है



टहनियों का सत्य

बीस-पच्चीस तक
वे खड़े रहे पास-पास
एक-दूसरे को
निहारते हुए
लेकिन पहुंचने तक तीस के
उनकी टहनियां आपस में
उलझने लगीं
कभी-कभार आपस में
भिड़ने लगी
हवा के झोंकों से
समझाया उन्होंने अपनी टहनियों को
तो जवाब पाया
आपके जमाने का अब
खुलापन नहीं रहा
संघर्ष लाजमी हो गया है
धीरे-धीरे
अपनी टहनियों के सत्य को
सत्य मान कर
वे भी एक-दूसरे से
मुंह चुराने लगे।



कोयल से

माना, तुम
बड़ा मीठा गाती हो
लेकिन तुम्हारी
आवाज के साथ
जमींदार के बाग की याद
सब कुछ
गड़बड़ा जाती है
हम रह जाते हैं
उदास के उदास
छोड़ते उच्छ्वास !

□

हिन्दुस्तान का बोझ

इस बुड्ढे की गठरी का बोझ
क्या तुम्हारे
हिन्दुतान के बोझ से
कम है ?
सच कहता हूं
तुम्हारे कंधे
हिन्दुस्तान का बोझ
इस कदर उठाते
तो ये बुड्ढे
इतनी तकलीफें
हर्गिज न पाते !



फिर भी

काफी तुड़वा गए हैं
खूंटो से
काफी खुल जाने को
जोर लगा रहे हैं
फिर भी कुछ लोग
आजादी को
बपौती मानते है
अभी भी



हम

जैसी जमाने ने दी
हवा
वैसी ही
आवाज निकाली
हमने,
हम तो थे
खाली बांसुरी



राम राज ला

मन तू राम गुन मत गा
राम से गुन अपने में ला
और तो और सही
अपनो को तो गले लगा
छोड़ सुख-सुविधाएं सारी
राम से कष्ट उठा
लाख दुर्बल आम जन सही
इनसे तू फौज सजा
जहां भी देखे आसुरी शक्ति
डट जा, भिड़ जा
बहुत दिन बीते कलियुग के
अब तो तूं राम राज ला



समता

समता बड़ी
जरूरी रे ! भाई,
समता बड़ी जरूरी
दिन दहाड़े
इज्जत लुट जाए
जमीन खुस जाए
पुलिस उल्टे केस बनाये
टूटे छप्पर के नीचे
सिसके मजबूरी
एक-एका तो
तुम भी हो खूब पुकारो
कभी 'समता' नाम भी
अपने श्रीमुख से उच्चारो
तभी होगी अखण्ड भारत की
तस्वीर पूरी
लोकतंत्र का खेल
बड़े-बड़े ही खेलें
देखो ये बकवास तुम्हारो
जनता कितने दिन और झेले
एक दिन तो टूटेगी
इस कुचक्र की धुरी
समता बड़ी जरूरी···



बड़ा किसान

देखो ! वह आता
बड़ा किसान
तोंद पर बांधे
टेरीकाट का सफेद तहमद
ओढे कीमती शाल
साथ लिये
विदेशी नस्ल का ठिगना कुत्ता
हराम की खाता
फिर भी देखो !
कितनी अकड़ दिखाता
शर्म कभी
मन मे भी नही खाता
इतनी सारी भूमि पर
इस जमाने मे भी
ताल ठोक के हक जताता
सीरी-सांझियों पर गुर्राता
देखो ! वह आता
गाव का बेताज
बादशाह ।

□

घृणा करो

और कुछ नहीं कर सकते तो
न सही
घृणा तो करो उनसे
जो चलते अनीति पर
पीते खून
मानवता का
घृणा करो उनसे
और ध्यान रखो
कहीं मिल न जाओ
तुम भी उनकी
जमात में



चेत बनाम 'चेतराम'

चेत महीना
नाम के अनुरूप
देता है इतनी चेतना कि
कपास और ईख की तरह
फूटने लगते हैं हमारे भीतर
नये-नये विचार
मन भर जाता है
उत्साह से
जैसे पेड़ नये पत्तों से
हाड़ी के दानो की तरह
पक जाता है हमारे भीतर का
विश्वास
कवि तो कविताएं
लिखता ही है
इस महीने पर
लेकिन आम आदमी भी
पीछे नहीं रहता
जब वह
अपने नवजात शिशु को
इसका नाम देता है—
'चेतराम'



इस लोकतन्त्र में

इन सालों मे
इस लोकतंत्र में
निचले तबके से
कोई नहीं कर सका प्रयास
कोई पार्टी या
संगठन खड़ा करने का
जबकि कई हाजीमस्तान
तैयार हैं
नयी पार्टियां बना कर
चुनाव लड़ने के लिए
कइयों ने
पुरानी पार्टियां तोड़ीं
और नयी जोड़ीं
लेकिन चरित्र सुधार के नाम पर
वही रहा
ठन ! ठन ! गोपाल !
देश के एक हिस्से में
धर्म के नाम पर
और एक हिस्से में
विदेशियों के बहाने
चलता रहा बराबर संघर्ष
जिसमे कितनी ही जानें गईं
लेकिन बराबरी के लिए
कहीं से
आवाज तक नहीं उठी
विकास में गति की जगह
भ्रष्टाचार मे
खूब प्रगति हुई

सेठों और सत्तासीनों में
खूब छनी
तभी तो महंगाई
इतनी बढ़ी
भूमि सुधार के नाम पर
भूपतियों को
कर-मुक्त किया गया
यानी बेजमीनों को
रौंदने के लिए
उन्हें और अधिक
मुटाया गया
'गरीबों को न्याय'
के शोर के बीच
कितने ही गरीब जलाए गये
कितने ही बेदखल हुए
कम-बेसी
इसी रूप में
बीसों के बीसों
सूत्र
चौपट हुए
उन्हें अपना भविष्य
विपक्षी सरकारें गिराने में ही
नजर आता रहा
इस तरह वे इस लोकतंत्र के साथ
भद्दा खेल खेलते रहे
और हम उन्हें
चुपचाप देखते रहे
जबकि लोकतंत्र में
लोकहित में
कुछ न हो रहा हो तो
जनता को
लगना चाहिए कि
उसके साथ
बलात्कार हो रहा है □

स्वप्न

नींद खुलने से
ठीक पहले
आज देखा मैंने
सीढ़ियों वाले एक
विशाल ताल के
निर्मल जल मे
उतरा हूं मैं
दूसरे घाट पर
पेटीकोट पहने एक औरत
तैर कर जा रही है
पानी में आगे तक
तभी मेरा ध्यान
बंटाता है
नागफनी का एक पौधा
जो पास ही के एक
लाल बंगले की
खिड़की से चिपटा है
एकाएक
नागफनी का एक-एक पत्ता
सांप के फन मे बदल जाता है
और हिलने लग जाता है
सारा पौधा बिच्छू-सा
मैं चाहता हूं
यह बेढंगा सांप
मारा जाये
लेकिन मारने वाला, कहीं कोई
मुझे नजर नहीं आता। □

अकाल से जूझते आदमी के नाम

गर्मी, धूल और
पसीने से
घबराकर
दिन में तीसरी बार नहा रहा हूं
मैं नहरों के इलाके का आदमी
धो रही है मेरी लड़की
कपड़े भर-भरकर
बाल्टियां
और वहां तुम शायद
तरस रहे होगे दिनों से
नहाने को एक बाल्टी
पानी को
इतनी गर्मी, धूल और
पसीने में न जाने
क्या हाल हो गया होगा
तुम्हारा ?
तीज के त्योहार पर
निकालने को सेवइयां
सान रही है आटा
घरवाली
तुम्हारे तो वहां
चल रहा होगा फाका ?
मेरी गाय को
हरा-नीरा और
दाना सब कुछ
मिलता है
लेकिन भाई, लगता है

तुमने तो पशुओं को
हांक दिया होगा
दूर कहीं
या वे तोड़ चुके होंगे
दम ही
इतनी दूर
भोगते हुए एकांत और
इतनी तकलीफें
सोचना नहीं कि
फिक्र नहीं किसे मेरी
तुम्हारे गम का साया
हम पर भी है छाया
लेकिन तुम्हें यहां
आने का आमंत्रण
देते हुए तो मैं भी
डरता हूं भाई,
यहां पानी की तो कमी नहीं
लेकिन काम और आटे के लिए तो
यहां भी कुछ लोग
मारे-मारे से ही फिरते हैं
साफ बात है पहले की-सी
उदारता कहीं नहीं
आप इसे कोरी सहानुभूति समझें या
साफगोई
आपकी इच्छा पर निर्भर करता है।



ये और मैं

वे वे ही हैं
और मैं मैं ही हूं
छुटपन में
जब वे अपने खेतों में
दूनाली बन्दूक से
शिकार खेला करते थे तो मैं
उनके खेतों से
बालियां बीना करता था
और मेरे बाप का कमाया गेहूं
इनके कोठों में
भरने जाया करता था
ऐसे मौकों पर
मैं हीन भावना से
भूमि में गड जाया करता था
मेरे भाई-बंद तो अभी भी
उस हीन भावना के शिकार हैं
मैं पढ़-लिखकर
एक अदनी-सी नौकरी से
जुड़ गया हूं
तो भी फर्क कहां पड़ा है ?
उनके राजधानी में
आलीशान मकान हैं
उद्योग-धंधे हैं
गांव में सैकड़ों एकड़
उद्यान हैं
मेवा बाड़ी के लिए
कई-कई परिचारक हैं

और मैं पड़ा हूं
एक कच्चे मकान मे
घरवाली काम-धंधों मे फंसी
वक्त पर खाना भी नही बना पाती
सलाद-वलाद तो छोडिये
दाल के साथ
प्याज तक काटकर नही
पकड़ा पाती
मैं भी तो कहां होता हूं
इतना खाली
कि इत्मीनान से लगा सकू थाली
अपने लिए
टाट का टुकड़ा तक नही
बिछा पाता हूं
या तो नीचे बैठकर ही या फिर
उकड़ूं बैठकर ही खाता हूं
संविधान की विशेषताएं
पढ़कर
दस-पन्द्रह साल पहले मैंने
उन्हें अपने बराबर आंका था
और उनके विरुद्ध चुनाव
लड़ने का
सपना पाला था
लेकिन मेरा सपना
सपना ही रहा
वे लगातार एम० एल० एं०
एम० पी०
और मिनिस्टर, बनते चले गए
और मैं हाथ मलते हुए
चुपचाप देखता रहा
चुनाव लड़ने का
नाम तक नही ले सका
यहां तक कि
अपने दोस्तों के बीच भी। □

तंग वाड़ों में

सवाल यह नहीं है कि
तुम्हारी जमीन-जायदाद में से
हिस्सा बंटाने पर
हम करोड़ो की हालत
कोई विशेष नहीं सुधरेगी
गौर करने की बात तो यह है कि
फिर तुम हमें
नहीं धकेल सकोगे
भेड़-बकरियों की तरह
तंग-वाड़ों में।



बड़े शहर की सड़क पर

इतनी मोटर-कारों और
आटो-रिक्शाओं के बीच
तुम कोई-कोई
अहमदाबाद की इन
तपती सड़कों पर
नगे पांव ठेला-गाड़ी खीचने
कहां आ गए भाई ?
लौट जाओ वहां
अपने जैसों मे
जहां तुम्हारा होना
होना लगे
या फिर इधर ही
कुछ ऐसा करो कि
इनके टायरों पर
रबड़ चढ़े तो
तुम्हारे पांव में भी
जूता पड़े !



गाड़ी रुकती है

हम जो गाड़ी में
सवार होते है
चाहते है
गाड़ी
हमारे गंतव्य स्थान से पहले
कही न रुके
यूं ही चलती रहे
(हमे चढाये हुए)
तेज और तेज
परन्तु गाड़ी रुकती है
उन लोगों को भी
यात्रा का अवसर देने के लिए
जिन्होंने यात्रा
हमसे बाद में
शुरू करनी होती है।



सर्कस के ये कलाकार

लकड़ी-से सूखे
हाथ-पांवों वाली
गृहस्थी और
सर्कस के
दो पाटो के बीच
पिसती
कितनी कमजोर हैं
इस छोटी सर्कस की
ये औरतें (लड़कियां)
और इनसे भी अधिक
दया के पात्र है
ये नन्हें-नन्हें बच्चे
जो निर्भय
खेलने-कूदने की उमर में
दिखा रहे है
कई करतब
खतरों से खेलकर !



तुम

बड़े होशियार निकले
तुम
हम
दहकते हुए पिण्डों को
जिन्हें तुम्हारे ही विरुद्ध
आग उगलनी थी
झोंक दिया
यद्ध मे
साम्प्रदायिकता में
और आप करने लगे मजे।



तुम और कविता

तुम्हें पाकर
एकान्त में
पुलकित तो
होता रहा हूं मैं
लेकिन इधर-उधर
तुमसे भी खूबसूरत
चेहरे देखकर
एक हूक-सी भी उठती रही है
सदा
शायद इसीलिए ही
मैंने तुम्हें कभी
अपनी कविता का
विपय नहीं बनाया ।



कलम की बजाय

किस कदर लगी है
आग देश मे
और फिर भी मैं
देख रहा हूं
मेरे भीतर के कवि
तू कई दिनों से
चुप है
क्या तुझे भी
कलम की बजाय
किसी
अदद
ओहदे की जरूरत है ?



चूहा-संस्कृति

जैसे चूहों पर बिल्ली आती है
ठीक उसी प्रकार
वे आते हैं
दो-चार को रोज मार जाते हैं
हम आये दिन
मनौती मनाते हैं कि
आज का दिन
सुख-शांति से गुजर जाए
लेकिन नहीं गुजरता
क्या सब कुछ चूहों में
तबदील हो चुका है ?
आदमी
यहां तक कि सरकार
और बन्दूकधारी
सिपाही भी।



झील देखकर

काले पहाड़ों
और गंदले पानी वाली
झील में
कहां है सुन्दरता ?
इससे तो सुन्दर हैं
इसे देखने आए
ये सैलानी
सचमुच ही
मैं फिर कभी यहा
आया तो
झील देखने नही,
लोग देखने आऊंगा।



पीतल के गहनों वाली सुन्दरी

सडक किनारे
अपने तम्बू के बाहर
खडी थी वह
देखा मैंने उसे
बस से
बस एक पल ही मे
रूप और यौवन उसका
छा गया
मेरे मस्तिष्क मे
सोचा—
इतना यौवन
और इतना रूप तो
होता नही होगा
महलों और
सोने के गहनों मे भी
सचमुच ही
इस पीतल के गहनों वाली सुन्दरी ने
किसी को
बनाया है शहंशाह
सौंप कर
रूप और यौवन का
इतना ऐश्वर्य !



साहबी मन

कुर्ता
थोड़ा ऊंचा
रह जाता है तो
लगता है ऊंचा है
और थोड़ा नीचा
रह जाता है तो
मन को सालता है।
नीचा है
यह साहबी मन है
जो किसी भी हाल मे
सन्तुष्ट नही होता।



भोपा-भोपी

डेढ़-दो हाथ बांस पर
बंधे
चार-छः तार
और कुछ घुंघरू
कितना रच रहे हैं संगीत
इस भोपे के
हाथों से
इनसे मिलकर
भोपी की तीखी राग
झनझना रही है
मेरे रोम-रोम को
शायद पीढ़ियों की
विरासत ही है
जो इन लकड़ी हुए हाथ-पांवों
और सूखे कंठो से भी
रचवा रही है
इतना मादक
संगीत !



एक दायित्व पूर्ण

बीन और तुम्बे का संगीत
उसके कानों में पड़ा
बड़ा मीठा लगा
लेकिन वह पास नही गया
क्योंकि
सपेरे के पेट का सवाल उसे
अपनी जेब पर
भारी लगा
उसने दूर खड़े रह कर
सुनना भी
उचित नही समझा
और चलने लगा।



प्रतिबद्ध

जी, हां ! मैं
वक्ती विषयों पर
लिखता हूं
आपकी यह दलील कि
समसामयिक
विषयों पर लिखा
शीघ्र ही मर जाएगा
पचती नहीं मुझे
आप ही
करते हैं कालजयी होने का
इतना फिकर
मुझे तो चिन्ता है
कि जिन-जिन
समस्याओं पर मैं
लिखता हूं
वे जल्दी से जल्दी
सुलझें
भले ही मेरी रचना को
कोई दो दिन बाद ही
न बूझे
लेकिन यह तो जानते हो
आप भी
मेरे काल-खण्ड के
देखने के लिए
गुण-दोष
आने वाली पीढ़ियां
जरूर लौटेंगी
मेरे रचना, संसार में ! □

खेत, बाड़ और मालिक

बाड ही जब खेत
खाने लग जाए तो
दोष मालिक का भी
उतना ही
होता है
जितना कि
बाड का ।
मालिक बाड़ बनाते वक्त
ध्यान क्यो नही देता
बाड की किस्म पर
और खेत खाने पर
उतारू बाड़ को
बदल देना भी तो
मालिक ही के बस मे होता है
लेकिन आज की बाड़ भी तो
पत्तेबाज है
मालिक की आखों में
धूल झोंकती है
खेत खुद खाती है
और नाम
चोरो का लगाती है।



उनके पंजे

उनके पंजों की
जकड़ तुम्हारे
गले के इर्द-गिर्द
काफी बढ़ गयी है
क्या तुम इसे
महसूस नहीं कर रहे हो
मैं तो इसे काफी अर्से से
महसूस रहा हूं
इस बार उनके पजे
तुम पीछे पकड़ कर
मरोड़ दो
नहीं तो वे तुम्हारी
गिची तोड़ देंगे
देखो उनके पंजो की
जकड़
कसती ही जा रही है
तुम्हारे गले पर।

□

वोट

वोट !
वोट !
वोट !
आखिर देना ही पड़ेगा इसे
किसे न किसे
रख कर भी क्या करेंगे ?
लेकिन दिल दुखता है
काश !
यह दही होता
जिसे बिलोकर
मक्खन हम निकाल लेते
और छाछ मांगने वाले के
दोने मे डाल देते !



उनके लिहाज से

बात करते हो
बेहतर जिन्दगी की
बराबरी की
आमूल चूल
परिवर्तन की
उनके लिहाज से
तुम्हें रोटियां
मिलती रहे
और किसी तरह
तुम्हारी
जिन्दगी
चलती रहे
तो भी
गनीमत है।



अब तो

लो ! अब तो कहीं
जिकर भी नहीं होता
भूख/बेकारी
और गैर बराबरी का
क्या होगा अब
दीनू और भीखू का
अब तो बातें होती हैं—
अंग्रेजी के स्तर सुधारने की
टी० वी० की
या सम्पत्ति पर से
कर हटाने की
समता के आधार बिना
खड़े होने जा रही
इसी कम्प्यूटरी प्रगति का
अंजाम होगा—
दीनू और भीखू की सिसकी का
कहीं हिसाब नहीं होगा ।



खोटे-खरे सिक्के

देखना !
यूं धीरे-धीरे
एक दिन
जितने भी
खोटे सिक्के हैं
चले जाएंगे
उनकी जेब में
और जो बचे रह जाएंगे
खरे-खरे
उन्हें जनता
चुन लेगी
अपना
सिरमौर बनाने के लिए !



तुम्हारा ध्येय

देने पर
लेते हो उधार
बने-बनाए घर
और आरक्षण की सुविधा
सरकार से भाई
लेकिन इतने में ही
तुम्हें गद्गद नहीं होना चाहिए
तुम्हारी खुशी की पहली शर्त
बड़ों के हक में से हक
बंटाने की
होनी चाहिए !



चुनाव में ड्यूटी

इतनी भीषण सर्दी मे
ओस में भीगते
ठिठुरते
रात-भर जागकर
मत-पेटियां जमा कराते
करते
हम इतने कर्मचारी
क्या पैदा कर सकेंगे
ऐसा कोई रत्न
जो हमारी इन सारी
तकलीफों को
दूर करेगा
जैसे कोई शिशु
पैदा होते ही
भुला देता है
अपनी जन्म-दात्री की
सारी प्रसव-पीड़ा।



छः कविताएं/क्रम पंचायत चुनाव

1

चुनाव से ठीक दो दिन पहले
पहुंची हैं गांव में
चुनाव पार्टियां
जानते हैं वे/बाबू लोग
ठर्रा और देशी नहीं पीते
इसलिए अंग्रेजी
घुलती है
जिन्हें नहीं रुचती
वे भी दाव लगाते हैं
पिलाने वाले को जिताने में
जोर लगाते हैं।

2

एक दम से
पचासों
अधमरे
मैले-कुचैले
मर्द-औरतों की
टोली आती है
चौनिम धूप में

फुस-फुसाहट फैल जाती है
'भट्ठे के मजदूर आ गये'
सोचता हूं—
ये शख्स
मालिक के लिए वहां
ईंट थे
यहां वोट हो
गये हैं !

3

पोलिंग बूथ में
आकर कई आदमी
पर्दे में सिमटी-सिकुड़ी औरतें
लेकर मत-पत्र
पूछती हैं—
'इसका क्या करें ?'
पोलिंग अफसर उन्हें
बताते हैं
फिर भी
एक-एक बूथ में
पचासों मत-पत्र
रद्द हो जाते हैं।

4

मतगणना के वक्त
काफी सारी पुलिस के
बावजूद
भीड़
मतगणना के कमरे तक

चढ़ आती है
शोर मचाती है
कोई नहीं
ऐसा मोतबर
जो इस अनियंत्रित होती
भीड़ को थाम ले।

5

वह देखो!
जो हार गया
कितना गमगीन है
यूं जा रहा है
जैसे मुर्गों की लड़ाई में
अपना सारा शरीर
नुचवा कर
हारा हुआ मुर्गा
अपनी
जान बचा रहा है।

6

और,
उधर देखो!
उनका हर्षोल्लास
जय-जयकार हो रही है
जीतने वाले की
फब्तियाँ कसी जा रही हैं
विरोधियों पर
किये जा रहे हैं पत्थर
छोड़ी जा रही हैं
आतिशबाजियाँ

बज रहे हैं ढोल
खुल रही हैं
बोतलें
कट रहे हैं
मुर्गे और बकरे
आज की रात
बड़ी वारदात हो
कोई बड़ी बात नहीं ।



उसकी हुंकार

जिस आदमी के
चेहरे और
बातों से
टपकती थी
हमेशा
बेचारगी
उसे जब सुना मैंने
हनुमान जी के जगराते मे
भरते हुए हुंकार
तो मैं
आश्वस्त
हो गया।



अपनी-अपनी ढाणियां

गांव सड़क से दूर
एक अकेला
बलवीर सिंह का परिवार
रहता है
खेत की ढाणी मे
दर्शन नही होते उन्हे
दिनों तक
दूसरे मिनख के
देखकर उसकी ढाणी
सोचता हूं मैं
एक बलवीर सिंह ही नहीं
कस्बो, शहरों और गांवों मे भी
कितने ही लोग
रहते है
अपनी-अपनी ढाणियों मे।



मास्टर

वह एक गाव के
दो सौ विद्यार्थियो वाले
विद्यालय को
अनेक कमियो—
एक सहायक
और एक-एक चपरासी—
के बलबूते पर
चला रहा था
उसका जन्म एक
अकडखोर जाति मे
हुआ था
लेकिन अब वह
इतना सीधा था कि
साइकिल पर
बीस-तीस मील चलकर
अपने चपरासी के साथ
मेला देख आया था
और रास्ते मे
मुझसे मिलने
आ गया
हालांकि वह
मेरा हमपेशा था
फिर भी मुझे लगा कि
उसके अनुभव
मेरे अनुभवो से भी
कटु हैं
वह ठीक ही तो कहता था—

'कस्बे मे मजे मे हो
महीने मे
सौ-सवा सौ का
मेडिकल उठाते हो
अखबार पढते हो
ढग के आदमियों से
मिलते हो
वहा क्या है गांव में ?
अनपढो के हाथ मे
हम पढे-लिखों की चोटी है ।'

मैंने कहा—
'सुना है गांव वाले तो
आपको लकडी, दूध
और न जाने क्या-क्या
मुफ्त देते है ।'

उसने कहा—
'वह जमाना
कब का लद गया मास्साब !
अब तो हाल यह है कि
न तो कुछ मोल ही देते हैं
और न ही मुफ्त
बाजार से डेढे दाम पर
क्विटल-दो क्विटल गेहूं
तुलवाते है
तो भी नखरा चढाते हैं—
ट्राली का भार कम हो जाएगा'
वह उन मास्टरों मे नही था
जो शौकिया हुआ करते हैं
जिनके गांव मे मुरब्बे
और शहरों मे कोठियां होती हैं
उसके कहे मुताबिक

उसने स्कूल में सदा इतना
मत्था खपाया कि
ट्यूशन पढाना तो दूर
घर आकर कभी
घर के बच्चों से
ढग से बात भी नही कर पाया।

वह सिर्फ आदर्शवाद ही
नही बघार रहा था
अपनी कमजोरिया भी
स्वीकार रहा था।
आपकी तरह
मैं तो घंटे-घंटे भर
क्लासो मे
नही टिक सकता
क्या करें आदतें ही
बिगड गयी
स्कूल टाइम मे भी
गाव में निकल जाता हू

जाते-जाते वह
मेरी कविताओ की
प्रशंसा कर रहा था
और मैं उसकी मौलिकता
ऊब
आक्रोश
और नेकनीयत के आगे
अपने आपको
बौना पा रहा था

और यह मेरी दूसरी हार है कि
इस कविता मे वह मास्टर

पूरा का पूरा नहीं आ पाया है
अच्छा यही रहेगा कि
पूरा का पूरा देखने के लिए
आप उसे स्वयं ढूँढ़ें
वह आप सबके
आस-पास है।



सीमान्त किसान

गाव का वह सीमान्त किसान
जो काफी दिनो मे पागल हो गया है
आज म बीस-पच्चीस साल पहले
पूरा सेहतमन्द था
अपनी पट्ठो और लाठी को
तेल पिलाया करता था
गाव के साड
और उसका झूठा ऊट
उसकी ललकार मे कांपते थे
लेकिन इस बीच
काफी हैरान और
परेशान करने वाली बाते
उसे सताती रही
उसे बार-बार सुनाया गया
कि ताकत
सोट मे नही
वोट मे होती हे

ऊट बेकार मे
सारा माल खाता हे
इससे तो अच्छा
किराये का ट्रैक्टर
मिनटों में खेत जोत जाता है
सिर्फ कूडी-कुरडी की खाद से
फसल मुनाफा नही देगी

यूरिया डालो
स्प्रे करो
पैसे नही तो
बैंक से उधार लो
(कम रेट का लालच दिया गया)
इस प्रकार
साहूकार बनिये के शोपण से
बचाने के नाम पर
उसे कर्जायती बने रहने के लिए
हिलाया गया।

यानी मदद के नाम पर उसे
मीठा जहर दिया गया
इतना जहर खाने के बाद भी
फसल की कोई
गारंटी नही थी।
आंधी-ओलों से
फसल मरी तो
मुआवजा
अव्वल तो दिया ही नही गया
और दिया भी गया तो
सरपंच-पटवारी
आधा बीच में ही
डकार गए

शिक्षा

नौकरी-व्यापार की
चकाचौंध मे भी वह आया
और किसी तरह से उसने
गांव के स्कूल में
अपने दो छोटे लड़को को
दसवीं तक पढाया
लेकिन उस दुनिया मे
वे खपे नही
खेत मे जगह थी कहां
इसलिए उसकी छाती मे
खूटे से गड गए।
उसकी पहुच से ज्यादा
दहेज लेकर सुसराल गयी
बेटियो से
उन्हे सताए जाते रहने के
समाचार लगातार आते रहे
उससे लाठी छुड़वाने वाले
और वोट की ताकत
समझने वाले
उसके कोई काम नही आए
गांव गुवाड़···
·········

उसे लगा कि
भीरडो-ततैयों के
छाते मे तबदील हो गया हे
पूरी मजदूरी न देने की वजह से
एक बड़े किसान से
झगड़ा तो उसके बेटे ने किया
लेकिन बेटे के साथ
पुलिस द्वारा
हिरासत में उसे भी
ले लिया गया
ऐसे में बेचारा वह

नेकदिल
भाई-चारे के माहौल में पला
सीधा-सादा किसान
पागल न होता
तो और क्या होता ?



अच्छा हुआ

मगतराम
बीच में ही
छोड गया स्कूल
टी० बी० का शिकार
उसका बाप
कुछ भी तो
करने लायक नही रहा था।
अच्छा हुआ
अगर मगतराम
पढ जाता तो
बेहतर जिन्दगी के लिए
शोर मचाता
किसी की नींद हराम करता
और कही ज्यादा ही
उग्र निकल जाता तो
हक-हकूकों के लिए
लड़ता हुआ मारा जाता !

तरक्की

जब से
ठहराव
आया है
मेरी जिन्दगी में
मैं काफी ईर्ष्यालु
झगडालू
और कई कमियों का
शिकार हो गया हूं
आदमी को
अच्छा बनाए रखने के लिए
कितना जरूरी है
उत्तरोत्तर
विकास।



खरीद-फरोख्त

तनख्वाह मिलने के
दूसरे दिन
कुछ जोश तो था ही
पत्नी की दी गई
लिस्ट के मुताबिक
मैं काफी देर तक
करता रहा बाजार मे
खरीद-फरोख्त
साबुन, पेस्ट
इलास्टिक
हल्दी-धनिया जैसी
कई चीजो के साथ
एक कानबेलिये से
थोड़ा सुरमा
और गांव के फटेहाल जाट से
थोड़ी 'काचरी'
उन पर तरस खाते हुए
खरीद तो ली
लेकिन इन दोनो चीजों की
खरीद
मुझे घर आने तक
कचोटती रही !



गांव के दरख्त

गांव के बाहर
जिन दरख्तों के नीचे
गर्मी के मौसम में
बैठते थे
गांव भर के मवेशी
सुस्ताते थे चारपाइयों पर
बड़े-बूढ़े
खेलते थे युवक ताश
बच्चे गुरा-डण्डा
गट्टे
सावन के दिनों मे
जिनकी डालों पर
पड़ते थे झूले
झूलती थी
गांव भर की छोरियां
जिनके नीचे पंचायत लगा करती थी
छोटा-मोटा नेता
जहां पिला जाता था
लोगों को भाषण
गांव में आने वाले हाकिम
जहां सजाते थे अपना दरबार
वहां अब मरणासन्न पड़े
इक्का-दुक्का पशु
गिनते हैं
अपनी अन्तिम घड़ियां
उनसे थोड़ी दूर
इनका पड़ोसी

बुढाया मातु नाई
कभी-कभार आ बैठता है
इनके नीचे
और उन पुराने दिनों को
याद करता हुआ
देखता है गाव की ओर
छोटे-बडे दरवाजों मे
या छप्परों मे
दबे हैं लोगों के मवेशी
बीच वाली कड़ी से
बंधा है एक झूला।
जिस पर झूल रहे हैं
घर भर के बच्चे
आदमी नहीं दे रहा है
कोई दिखाई !



गर्मी में

इस भीषण गर्मी में
कुछ भी तो पूरा नहीं होता
न तो पूरा खाया जा सकता है
और न ही सोया जा सकता है
काम-काज की सुध ही कहा है
कितना कम हो गया है
बाहर निकलना
मिलना-जुलना।
इस गर्मी के डर से ही तो
गांव नही गया हूं
इस प्यारे गांव मे
जहां गुलाबी ठंड मे
खेत लहराते हैं
और मतीरे पकते हैं
वहां अब जाऊं भी तो
क्या मिलेगा
चारों ओर उडती
गर्म रेत
भांय-भांय !
करते खेत
पानी
पानी तो
लोगों की आंखों तक का
सूख गया होगा
कुएं की तो
कूवत ही क्या है ?



अनसुना मैं

मेरे पास
वक्त भी है
और बातें भी हैं
लोगों को बताने के लिए
लेकिन कुछ लोगों को तो
इस बात की परवाह ही नहीं है कि
मैं उन्हें कुछ कहना
चाहता हूं

कुछ को परवाह है भी तो
उनके पास वक्त नहीं है
सुनने के लिए
कुछ कहते हैं—
मेरी बातों मे
कोई सार नही है

कुछ कहते हैं—
ऐसी बातें बनाना तो
हम भी जानते हैं

लोग मेरी बातें न सुनें
इसीलिए
स्थापित हैं
कई-कई संस्थाएं

मठ
आवाज के गढ

इसलिए मैं
बहुत कुछ बताना
चाहते हुए भी
अनसुना रहता हूं।



बढ़ी हुई खुशहाली में

गांव से
शहर जाने वाली सड़क
हो गयी है
तीन-चार गुना चौड़ी
जिस पर दौड़ती हैं
डीलक्स बसें
मारुति कारें
हीरो-हॉण्डा
शहर पटा पड़ा है
आधुनिक डिजाइन की
इमारतों से
फैला भी बहुत अधिक है
इधर मेरे गांव में भी
लोग हो गए हैं
कार और कोठी वाले
ट्रैक्टरों की तो बात ही क्या है
लेकिन अपना तो वही
हाल है
वही रेट है मजूरी का
वही टंटा है
बेगार का
बे-वजह दबाव का
अपनी दड़बेनुमा कोठरी से
निकलता हूं जब भी बाहर
आधा भूखा और बीमार तो
बदलाव की चकाचौंध से
मेरी आंखें चुंधिया जाती हैं

कलेजा मुंह को आता है
बे-मौत मरने को
जी चाहता है
इस बढ़ी हुई
खुशहाली में।



घर के भीतर घर

चाहे अमीर का हो
चाहे गरीब का
घर के भीतर एक घर
रहता है।

बच्चो वाले घर के भीतर
जब वे छोटे होते हैं
उनका यह घर
किसी एक कोने मे सटा रहता है।

जब वे बड़े होते हैं
उनका यह घर
उनके मस्तिष्क में
रहता है।

ताज्जुब हम कभी
उनके घर पर (इतने निकट होकर भी)
दस्तक नहीं देते
कभी हल्का होकर
दस्तक देकर देखें तो
हम पाएंगे कि
अपने घर पर
बड़े मेहमान को आया देखकर
वे खुश हो जाएंगे

वे अपने घर की
एक-एक चीज के बारे में
विस्तार से बताएंगे
और हम पाएंगे कि उनका घर
बहुत बड़ा है
हमारे घर से भी बड़ा।



आदमी मारने से पहले

एक निरह-बेकसूर
आदमी को मारने के लिए जाते हुए
आप यह क्यूं नही सोच रहे होते हैं कि
हम मानवता को मारने जा रहे है
आप उस समय यह क्यूं नही सोचते कि
हम एक चहकते हुए घर को
मरघट मे बदलने जा रहे है
क्या आपने कभी
बिन बाप के बच्चों को
समाज में
दर-दर की ठोकरें खाते नही देखा है ?
क्या आपने कभी
उजड़े सुहाग वाली
विधवाए नही देखी है ?
क्या कभी ऐसे मा-बाप नही देखे
जिनका जवान बेटा चल बसा हो ?
अगर देखे है तो
अपने शिकार पर झपटने से पहले
उनका ध्यान
अपने हृदय में धरो
और सोचो कि आप
क्या करने जा रहे हैं ?

